जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष -५९ अंक - २
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक :१००) रु०
आजीवन -१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

माघ-फाल्गुन : सम्वत् २०७२ वि०   फरवरी – २०१६

सुनीति देवी शर्मा
जन्म : २९ जून, १९३१, मृत्यु : ०५ जनवरी, २०१६

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य समाज कलकत्ता (युवा शाखा) द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी निःशुल्क नेत्र शल्य-चिकित्सा शिविर १७ जनवरी २०१६ को आयोजित किया गया। जिसमें २५ असहाय और निराश्रित व्यक्तियों का सफलतापूर्वक मोतियाबिन्द का आपरेशन किया गया। आपरेशन चिकित्सा विज्ञान की आधुनिकतम पद्धति माइक्रो सर्जरी द्वारा किया गया। यह चिकित्सा शिविर नगर की सुप्रसिद्ध नेत्र सर्जन डॉ० रजनी सर्राफ एवं उनकी मेडिकल टीम के देख-रेख में सम्पन्न हुआ।

शोक समाचार

भारतवर्ष के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जी का ८४ वर्ष की आयु में सोमवार २७ जुलाई २०१५ को हृदयगति अवरुद्ध हो जाने से निधन हो गया है। यह देश के लिए अपूरणीय क्षति है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक २-८-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर आदरणीय पूर्व राष्ट्रपति जी की आत्मा की शान्ति एवं सद्‌गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गयी।

२. आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (चम्बा) का निधन ५ अगस्त २०१५ को हो गया है। आप आजीवन आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में संलग्न रहे। आपके निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक ९-८-२०१५ के रविवारीय सत्संग पर शोक प्रस्ताव पारित कर उन्हें हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

३. आर्य समाज कलकत्ता के आचार्य स्व० उमाकान्त उपाध्याय जी की सुपुत्री श्रीमती राजश्री शुक्ला जी की सास श्रीमती शान्ती रानी शुक्ला (धर्म पत्नी - स्व० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल) जी का आकस्मिक निधन सोमवार ३१ अगस्त २०१५ को लगभग ८० वर्ष की आयु में हो गया है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक ६-९-२०१५ को रविवारीय सत्संग पर आदरणीय माता जी की आत्मा की शान्ति एवं सद्‌गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को वियोगजन्य दुःख को सहन करने हेतु प्रार्थना की गयी।

४. आर्य स्त्री समाज भवानीपुर की मंत्रिणी श्रीमती शशिनागपाल जी के पति श्री नरेन्द्र नाथ नागपाल जी का आकस्मिक निधन १० सितम्बर २०१५ को लगभग ७२ वर्ष की आयु में हो गया है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १३-९-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

५. आर्य समाज कलकत्ता की सदस्या श्रीमती शान्ति देवी (खिदिरपुर) जी की माता जी श्रीमती कमला देवी जायसवाल जी का निधन शनिवार १२ सितम्बर, २०१५ को लगभग ८५ वर्ष की आयु में हो गया है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १३-९-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

६. आर्य समाज खड़गपुर के मन्त्री श्री चन्द्रकान्त जी की माताजी श्रीमती बेला शर्मा जी का निधन

(शेष पृष्ठ २७ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — २
माघ-फाल्गुन २०७२ वि०
दयानन्दाब्द १९१
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६
फरवरी — २०१६

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१. इस अंक की प्रस्तुति		३
२. वेद सत्संग से जीवन निर्माण	स्व० आचार्य उमाकान्त उपाध्याय	४
३. श्रीमती सुनीति देवी शर्मा	जीवन परिचय	७
४. श्रीमती सुनीति देवी शर्मा एक बहु-आयामी व्यक्तित्व	श्रीमती सरोजिनी शुक्ला	८
५. श्रीमती सुनीति देवी शर्मा अविस्मरणीय व्यक्तित्व	पं० योगेशराज उपाध्याय	११
६. श्रीमती सुनीति देवी शर्मा	श्रद्धांजलि	१३
७. कीर्तिर्यस्य स जीवति	श्रीमती सुमना गुप्ता (आर्या)	१४
८. शंका समाधान	पं० देवनारायण तिवारी	१५
९. महर्षि दयानन्द जी ऋत सत्य ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गए	पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'	१९
१०. वेद महान वैज्ञानिकों की दृष्टि में	विद्यावाचस्पति परीक्षित मंडल	२१
११. महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्ग दर्शक	श्री खुशहाल चन्द्र आर्य	२४
१२. आर्य जगत के समाचार		२६

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६

दूरभाष : २२४१-३४३९ *email : aryasamajkolkata@gmail.com*

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

३७

वेद-सत्संग से जीवन-निर्माण

तमिद् वोमेचा विदथेषु शंभुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् ।
इमां वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत् ।।

ऋ० १-४०-६

शब्दार्थ :-

तम्+इद्	= उसको ही	वाचम्	= वाणी को
वोचेम	= बोलें, उपदेश करें	प्रतिहर्यथ	= प्रतिहरण, प्राप्ति की अभिलाषा
विदथेषु	= यज्ञों में, उपदेश, सत्संगों म		
शंभुवम्	= कल्याणकारी को	नरः	= मनुष्य
देवाः	= देव, विद्वान्	विश्वेद्	= विश्वा+इद्=सारी, सम्पूर्ण
अनेहसम्	= अन्+एहसम् पाप रहित, निष्कलंक	वामा	= सुन्दर, प्रशंसा
		वः	= तुम्हारे लिए
इमाम्	= इसको	अश्नवत्	= प्राप्त हो

भावार्थ :-विद्धान् देव लोग यज्ञों में, सत्संगों में, उपदेशों में, निष्पाप, कल्याणकारी वेद मंत्रों को बोलें । श्रोता गण इस निष्पाप वाणी के प्रतिहरण, आचरण की अभिलाषा करें । इससे सुन्दर प्रशंसा की प्राप्ति, सफलता तुम्हारे लिए उपलब्ध होगी ।

विचार विन्दु : १. द्रव्य-यज्ञ, ज्ञान-यज्ञ, (विद्=ज्ञान+थ),
२. विदथ सत्संगों के रूप और उपदेशों की आवश्यकता ।
३. उपदेशों का स्वरूप-निष्पाप, कल्याणकारी, वेद मंत्रों के सहारे ।
४. उपदेशों का श्रवण-मनन-आचरण हो, आचरण अन्तिम परिणति है ।
५. सुष्ठु, सुन्दर, प्रशंसनीय सफलता की मंगल कामना ।

व्याख्या

प्रस्तुत वेद मंत्र में प्रभु से प्रार्थना है कि प्रभो ! जीवन में, यज्ञों में, हमें सत्संग की प्राप्ति हो और हम अच्छे उपदेश सुनें । मनुष्य में देव भाव और दानव भाव, दोनों बसते हैं । जब देव-तत्वों की प्रमुखता रहती हैं तो देव-वृत्तियां मंगलकारी- संकल्प मन में आते हैं और जब राक्षस-

वृत्तियां होती हैं तो मन में बुरे-संकल्प जागते हैं । मंत्र में कहा गया है कि हम अपने सत्संगों में, यज्ञों में, देव-वृत्तियों को जगाने की भावना प्राप्त करें ।

हम प्रतिवर्ष विजयादशमी के दिन रावण का पुतला जलाते हैं और भारतवर्ष के लोग रावण का पुतला जलाने में बहुत उत्साह दिखाते हैं । कहते हैं कि इसी दिन विजय-दशमी को रावण का पुतला जलाकर, बड़े उत्साह से लोग घर लौट रहे थे। कहते हैं नगर के चौराहे पर विशालकाय रावण पुतले से भी बड़ा खड़ा होकर अट्टहास कर रहा था । लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें जलाकर आ रहे हैं, तुम यहां खड़े होकर हंस कैसे रहे हो ? रावण ने हंसकर कहा--अरे भाई ! तुमने रावण का पुतला नहीं, अपने हृदय में देखो, राम का पुतला जलाया हैं । वह कागजों का रावण था और जीता-जागता रावण तो तुम्हारे हृदयों पर राज कर रहा हैं । रावण ने आगे कहा—मैं तो तुम्हारे हृदयों पर राज करता हूं, राम को तो तुम वहां फटकने भी नहीं देते । अच्छा ! सच बोलना क्या तुम राम जैसे पितृ-भक्त, सदाचारी, परायी स्त्रियों को मां, बहन की तरह समझने वाले हो । तुम्हारे मन में क्या राम जैसा रामपन बसता हैं । तुम्हारे हृदयों में तो मेरा रावणपन ही बसता हैं । तो तुमने पुतला राम का जलाया या रावण का ?

मंत्र में कहा गया है कि यज्ञों-सत्संगों में विद्वान लोग कल्याणकारी, निष्पाप भावनाओं से परिपूर्ण वेदमंत्रों का उपदेश करें । यज्ञों में और सत्संगों में ऐसे उपदेश हों, जो कल्याणकारी हों और मनुष्य को पाप-कर्मों से दूर करें । इतिहास का एक बड़ा प्यारा संस्मरण है । कहते हैं स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस समय गुरुकुल - कांगड़ी खोला था उस समय किसी काम से दिल्ली आये थे। आर्य समाज में उनका प्रवचन था और दिल्ली में चर्चा थी कि जो महात्मा पहाड़ों में जाकर गुरुकुल खोल रहे हैं, वे दिल्ली आये हैं । दिल्ली के प्रसिद्ध सेठ रघुमल जी को उनके किसी मित्र ने प्रेरणा की कि चलो ऐसे महात्मा का दर्शन कर आयें । उपदेश भी सुन लें । रघुमल जी सुनाते हैं कि महात्मा जी के मन में क्या आया कि वे रघुमल जी की आंखों में झांकते हुए बोले कि मैं देख रहा हूं कि यहां कुछ लोग ऐसे बैठे हैं जिनके मकानों में किराये देकर वेश्याएं रहती हैं । यह पाप का धन हैं । आप साधु की बात पर विश्वास करें, यदि आपने यह पाप-कर्म बंद करवा दिया तो आपका धन निश्चित रूप से बढ़ जायेगा घटेगा नहीं । साधु की बात हृदय में समा गई और रघुमल जी ने वेश्याओं को निकाल कर आदेश दे दिया कि मेरे किसी मकान में कभी किसी वेश्या को न रखा जाये । कहते-कहते रघुमल जी भावुक हो उठे, आंखें अश्रुपूरित हो उठीं । रघुमल जी ने सुनाया कि पाप का धन बन्द हो जाने पर अब इतने रुपये आ रहे हैं कि समझ में नहीं आता कि इन्हें कहां व्यय करूँ ।

मंत्र में कहा गया हैं विद्वान लोग निष्पाप कल्याणकारी उपदेश करें और सुनने वाले इन

उपदेशों को ग्रहण करें, अपने आचरण में उतार लें । उपदेशों का प्रथम श्रवण होता हैं, श्रोता सुनते हैं फिर सुने हुए उपदेश पर मनन करते हैं और फिर उसे आचरण में उतारते हैं । सुने हुए उपदेश को आचरण में उतारना अंतिम चरण हैं, 'संश्रुतेन गमे महि, मा श्रुतेन विराधिषि' हम जैसा सुने, वैसा ही, आचरण करें, सुने हुए के विपरीत आचरण न करें। आचरणहीन व्यक्ति का वेद-पढ़ना या सत्संग में जाना सब व्यर्थ है । कहा है -

'आचारहीनं न पुनन्ति वेदा:'

जो आचरणहीन होते हैं, वे वेद-पाठ करने से या भजन-कीर्तन करने से पवित्र नहीं होते हैं आचरण पवित्र होना चाहिए।

मंत्र में कहा है कि जो आचरण-वान होते हैं उन्हें धन भी मिलता है, जीवन में सफलता भी मिलती हैं और उनका यश भी बढ़ जाता है । जब निष्पाप सुन्दर ज्ञान मिलेगा तो कर्म भी सुन्दर होंगे । सन्तान और परिवार भी सुन्दर बनेंगे । राम और भरत एक दूसरे के लिए अयोध्या के राज्य को ठोकर मार रहे हैं । मुगलों में कई ऐसे बादशाह हुए हैं, जिन्होंने अपने भाइयों को मरवा कर राजगद्दी ले ली । बाप को जेल में डालकर राजगद्दी पर बैठ गये। मंत्र का सीधा सा संदेश हैं कि यज्ञ-मय जीवन और मंगलमय उपदेश से आचरण सुन्दर बनेगा और संसार ऐसे लोगों की प्रशंसा भी करेगा ।

साभार : वेद-वीथिका

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

शान्ताक्रुज, मुम्बई और अन्य आर्य समाजों ने भी आपकी संगीतकला का सम्मान किया है ।

पिछले कुछ दिनों से श्रीमती सुनीति देवी जी कविताएं लिखती रही है और उनकी कविताएँ का संग्रह 'एक गुच्छा फूलों' का नाम से प्रकाशित हुआ है।

श्रीमती सुनीति देवी सुप्रसिद्ध गायिका तो हैं ही, इनके इस गुण से लाभ उठाने के लिए आर्य समाज कलकत्ता ने अपने शताब्दी प्रोग्राम के भीतर एक संगीत कैसेट बनाने का निश्चय किया। १३ गीतों का वाद्य-संगीतमय सुललित सुन्दर कैसेट बनाने को श्रीमती सुनीति जी ने निरन्तर गाकर अपना एक रिकार्ड स्वयं ही स्थापित कर दिया। श्रीमती सुनीति जी ने विदेश यात्राओं में टोरंटो, कनाडा आदि में भी अपना संगीत प्रस्तुत किया है। इन्होने बहुत सारे वेद मंत्रों को संगीत बद्ध किया है। श्रीमती सुनीतिजी ने दस वैदिक पुस्तकें लिखी है। इन्होंने तीन आर्य समाजों की स्थापना की है, ये आर्य समाजों में उपदेशिका, पुरोहित एवं आचार्या के रूप में कार्य करती रही हैं। श्रीमती सुनीति शर्मा जी का सारा जीवन एक यशस्वी, विदुषी, कवयित्री, आचार्या का रहा है। श्रीमती सुनीति जी का वर्तमान पता निम्न प्रकार है:-

७०२, गुलमोहर 'ए', पूनम काम्पलेक्स,
आशानगर, कादीवली पूर्व,
मुम्बई-४००१०१

फोनः- ०२२-२८५४०५५९

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा का मुम्बई में दिनांक ०५.११.२०१५ को निधन हो गया। श्रीमती शर्मा दीर्घ काल तक आर्य समाज से जुड़ी रहीं। 'आर्य संसार' की सहसम्पादिका भी थीं। इस अंक में कई लेख उनकी स्मृति में हैं। प्रस्तुत जीवन परिचय 'आर्य समाज कलकत्ता का इतिहास' से उद्धत है।

— सम्पादक

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा का जन्म २९ जून १९३१ ई०को हनुमान रोड, नई दिल्ली में हुआ था। पिताजी श्री पं० शालिग्राम शर्मा और माताजी श्री शान्ति देवी शर्मा थीं। सुनीतिजी का सारा परिवार कट्टर आर्यसमाजी निष्ठा का था और इनके जन्म के समय पिताजी हनुमान रोड आर्य समाज के मंत्री थे। श्री शालिग्राम जी शर्मा रेलवे के आफिसर थे। जहां जाते थे वहीं आर्य समाज की स्थापना करते थे। आर्य समाज पहाड़गंज, दिल्ली, की भी स्थापना श्री शर्माजी ने की थी। इस प्रकार श्रीमती सुनीति जी जन्म से ही आर्यसमाजी हैं। शिक्षा का आरम्भ आर्य कन्या पाठशाला से हुआ था और शैशव से ही माताजी के साथ सत्संगों में जाती और भजन बोला करती थी। शिशु सुनीति के भजन भी बड़े प्यार से सुने जाते थे। घर का सारा वातावरण आर्य समाज के रंग में रंगा हुआ था। पिताजी रेलवे आफिसर के रूप मे अच्छे स्तर से रहते थे। आर्य समाज में आने वाले उपदेशकों का आतिथ्य घर पर हुआ करता था। सुनीति जी ने बड़ी श्रद्धा से यह संस्मरण लिखा है कि हैदराबाद सत्याग्रह के लिए परम पूज्य वीतराग सन्यासी श्री नारायण स्वामी जी गये थे तो उस समय प्रस्थान से पूर्व वे इन्हीं के घर पर टिके हुए थे और यहीं से उन्हें विदाई दी गयी थी। सुनीतिजी को हिन्दी, संस्कृत और संगीत से आरम्भ से ही बड़ा स्नेह रहा है। घर में यज्ञ, सत्संग का वातावरण रहता था। एक समय श्री लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति और उनकी पत्नी भी इनके मकान पर आकर रहने लगे थे और यह सारा वातावरण आर्यसमाजमय हो रहा था।

पिताजी कट्टर आर्यसमाजी तो थे ही, उन्होने अपने दोनों पुत्रों का यज्ञोपवीत कराया तथा अपनी पुत्रियों का भी यज्ञोपवीत कराया था। ११ वर्ष की आयु में श्रावणी उपाकर्म के दिन सुनीतिजी का यज्ञोपवीत हुआ था। आपका विवाह श्री सुखदेव जी शर्मा के साथ आर्य समाजी परिवार में हुआ और यह शर्मा दंम्पति हर प्रकार की पौराणिक कट्टरताओं को दूर करके आर्य समाज के काम में लगे रहते हैं। शर्मा दम्पति ने अपने विवाह की रजत-जयंती पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी किया था। शर्मा दम्पति सन् १९५५ ई० में आर्य समाज के सदस्य बने और आर्य समाज के हर बड़े छोटे कार्य में पूर्ण रूप से सहयोग करते रहे। श्रीमती सुनीति देवी शर्मा आर्य समाज कलकत्ता के मासिक मुखपत्र आर्य संसार की सह-सम्पादिका रही है। श्रीमती सुनीति देवी शर्मा बड़ी कुशल और सक्षम गायिका है। इनका स्वर और संगीत प्रभुप्रदत्त है। जिस समय गाने बैठ जाती है श्रोता इनकी संगीत लहरी में हिलोरे लेने लगते है। आर्य समाज कलकत्ता ने इनकी संगीत साधना पर इनका सम्मान किया है और इन्हें **संगीत भारती** की उपाधि से विभूषित किया है। एक आर्य गायिका के रूप में सुनीतिजी की ख्याति अंतरराष्ट्रीय है। आपने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नैरोबी मे सन् १९७८ ई० में एक गायिका के रूप में बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। इस ख्याति के फलस्वरूप सारे भारतवर्ष में आपके संगीत की प्रसिद्धि हुई। आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा : एक बहु-आयामी व्यक्तित्व

– श्रीमती सरोजिनी शुक्ला

मृत्यु तो अपनी सखी है, युग युगों से त्राण-दात्री,
न यदि यह त्राण देती, जरा जर्जर जरजराती ।

आज से करीब ३६-३७ वर्ष पूर्व सुनीति जी ने स्वयं इन पंक्तियों को लिखा था और ५ जनवरी २०१६ को खुद ही उस त्राण-दात्री सखी से मिलने चल पड़ीं, परम ब्रह्म में लीन हो गई।

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा आज हमारे बीच नहीं हैं पर उनसे जुड़ी अनगिनत स्मृतियाँ मेरे मानस-पटल पर आ रही हैं और ऐसा उन सभी के साथ हो रहा होगा जिन्होंने सुनीति जी को जाना है, उन्हें पहचाना है क्योंकि उनका व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था जिसे भुलाया नहीं जा सकता । मेरा सुनीति जी के साथ करीब करीब ४४ वर्षों का सम्बन्ध है और मैं उनके व्यक्तित्व पर संक्षेप में कुछ कहना चाहूँगी।

सन् १९७२ अगस्त माह में आर्य कन्या महाविद्यालय में प्रधानाध्यापिका के रूप में मेरी नियुक्ति हुई । विद्यालय के प्रबन्धकारिणी समिति के मंत्री थे श्री सुखदेव जी शर्मा एवं उनकी पत्नी थीं श्रीमती सुनीति जी शर्मा । कुछ समय उपरान्त मैं आर्य समाज कलकत्ता की सदस्या बनी एवं शर्मा जी ने आर्य समाज कलकत्ता में सुनीति जी से मेरा परिचय करवाया । आर्य समाज कलकत्ता के साप्ताहिक रविवारीय सत्संग एवं अन्य अवसरों पर सुनीति जी के भजनों का गायन अवश्य होता था, उनका कोकिल-कण्ठी गायन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता था । श्रीमती सुनीति ज़ी का व्यक्तित्व बड़ा ही सम्मोहनीय था, उनसे बातचीत करके अपनत्व का बोध होता था । उस वक्त तक मैंने उनके गृहिणी रूप को ही देखा था । परिवार के सभी के प्रति उनका कर्त्तव्य एवं स्नेह अनुकरणीय था । परिचितों से अपनत्व से मिलना उनकी एक बहुत बड़ी विशिष्टता थी ।

धीरे-धीरे घनिष्टता बढ़ती गई एवं वर्ष १९७७ में आर्यकन्या महाविद्यालय के स्थापना के ७५ वर्ष पूर्ण होने का समय आ गया था । श्री सुखदेव जी शर्मा विद्यालय के मंत्री थे उन्होंने कार्यक्रम को विशद रूप से आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया । विद्यालय में अध्यापिकाओं एवं छात्राओं के सहयोग से विभिन्न विषयों से सम्बन्धित प्रदर्शनी रखी गयी जिसमें मनोविज्ञान, साइंस, गृहविज्ञान एवं सिलाई-कढ़ाई आदि विषय थे । यह प्रदर्शनी दो दिवसीय थी । सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बंगला नाटक 'एकलव्य' चयनित हुआ और हिन्दी के कार्यक्रम के लिए मेरी इच्छा थी कवि नरोत्तम दास द्वारा रचित काव्य रचना 'सुदामा चरित' के नृत्य-नाट्य रूप में प्रस्तुत करने की । मुझे इस नृत्य-नाट्य को चुनने का साहस इसलिये हुआ क्योंकि पता था कि सुनीति जी हैं जो इसे मूर्त रूप देने में सक्षम हैं और इसे प्रस्तुत करने में सहयोग भी देंगी । अतः मैंने सुनीति जी से सहयोग के लिए अनुरोध किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

१९७७ में पूजावकाश (लगभग एक महीना) के दौरान वे विद्यालय प्रत्येक दिन आती रहीं एवं उन्होंने पूरे सुदामाचरित को संगीतबद्ध किया, साथ ही अध्यापिकाओं एवं छात्राओं को गायन का अभ्यास करवाती रहीं । संगीत एवं नृत्य की अध्यापिकाओं का मार्गदर्शन भी उन्होंने किया ।

१९७७ के दिसम्बर माह में सांस्कृतिक कार्यक्रम दो दिन करने का निर्णय किया गया । प्रथम दिन कार्यक्रम हुआ महाजाति सदन में — कार्यक्रम के अध्यक्ष थे **पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु एवं मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण किया तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री त्रिभुवन नारायण सिंह ने** । सम्पूर्ण कार्यक्रम की बहुत सराहना की गई किन्तु सुदामा-चरित नृत्य-नाट्य बहुप्रशंसित रहा । 'सुदामा-चरित' में द्वारकाधीश श्रीकृष्ण एवं निर्धन ब्राह्मण सुदामा की अनुपम मैत्री को बहुत सुन्दर ढंग से दर्शाया गया था निम्न पंक्तियों ने सभी दर्शकों को द्रवित कर दिया —

देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करके करुनानिधि रोये ।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये ॥

महामहिम राज्यपाल जी सुदामा-चरित देखकर बहुत प्रभावित हुए । दूसरे दिन हिन्दी हाई स्कूल के सभागार में इस प्रोग्राम की पुनरावृत्ति होने को थी । महामहिम राज्यपाल जी ने अपने परिवार के सदस्यों को इस कार्यक्रम को देखने के लिए भेजा । यह कार्यक्रम की सफलता को दर्शाता है, कहने का अभिप्राय यह है कि इस कार्यक्रम के सफलता का पूर्ण श्रेय श्रीमती सुनीति जी को जाता है ।

श्री सुखदेव जी शर्मा प्रबन्धकारिणी समिति के मंत्री तो थे ही किन्तु उनकी सहधर्मिणी सुनीति जी का भी सहयोग विद्यालय को हमेशा मिलता रहता था ।

सुनीति जी के आदर्श गृहिणी एवं संगीत की विशिष्ट गायिका का रूप तो सभी देखते रहे किन्तु १९८० में उनके कवि रूप को देखकर मैं स्तंभित रह गई । उन्होंने कविताओं का एक संकलन मुझे दिखाया जो कि **'एक गुच्छा फूलों का'** नाम से बाद में प्रकाशित हुआ, कवयित्री ने इस संकलन में विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला है । दहेज-प्रथा पर उनके उद्गार देखिए —

घर जिसकी कन्या क्वारी है उसको तो चिन्ता भारी है ।
कब क्या होगा कैसे होगा जग हँसी से भी तो ख्वारी है ॥

और भी देखिए —

मेंहदी सुख की सूख गई, यश तिलक हुआ सहसा काला,
लोभ ने कितनों को पहनाई असमय ही मृत्यु की माला ।

गोहत्या पर उनका हृदय गोपाल को पुकारने को विवश है कह उठती हैं —

भारत माँ के प्राण पुकारे, आओ हे गोपाल !
आज तुम्हारी गौएं रोती, कहतीं हा हा रँभाती हैं,
हमारे आओ हे गोपाल !

पुरुष-प्रधान समाज का नारी के प्रति अन्याय उनके हृदय में शूल के समान है । इस सम्बन्ध में मर्यादा पुरुषोत्तम राम तक से प्रश्न कर उठती हैं । सीता के प्रति अन्याय को वे राम की निष्ठुरता मानती हैं । देखिए —

तुमने सबको आदर्श दिया,
पर हाय राम ! क्या कहे सिया ?
कैसे पति थे तुम राम,
हे जानकि बल्लभ राम ।

और आगे देखिए —

क्यूँ अग्नि परीक्षा लेकर भी
उसको न अङ्गीकार किया ।

सुनीति जी एक गायिका के रूप में तो सुपरिचित थीं ही, उनके कविरूप को देखकर लगा एक संगीत कलाकार एवं एक सफल गृहिणी के अन्दर कवि का कोमल और संवेदनशील हृदय भी था। एक अद्‌भुत संयोग ये है कि अपनी गृहस्थी के प्रति, समाज के प्रति उत्तरदायित्व के साथ-साथ कवि मन को भी सफलतापूर्वक सबके सामने लाने में सक्षम रहीं वो ।

संभवतः १९९५ में श्री सुखदेव जी शर्मा ने कोलकाता से सपरिवार दिल्ली जाने का फैसला किया। भारी मन से हम सबको उनके इस निश्चय को स्वीकार करना पड़ा । श्री सुखदेव जी शर्मा अपनी योग्यता एवं सुदक्षता के कारण निरन्तर २४ वर्षों तक (१९७२ से १९९५ तक) आर्य कन्या महाविद्यालय के मंत्री रहे । इनके मंत्रित्व काल में विद्यालय ने अनेक ऊँचाइयों को हासिल किया। १९९५ में महाजाति सदन में ही एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता **कोलकाता कारपोरेशन के तत्कालीन मेयर श्री प्रशान्त चटर्जी जी** ने किया । इसी समारोह में आदरणीय सुखदेव जी शर्मा का विद्यालय की ओर से उनके योगदान के लिए अभिनन्दन किया गया । श्रीमती सुनीति शर्मा जी को भी विद्यालय में उनके अवदान के लिए सम्मानित किया गया।

यद्यपि कोलकाता से शर्मा जी एवं सुनीति जी चले गए थे किन्तु विद्यालय के प्रति उनका लगाव बना रहा । ३१ अगस्त'१९९९ को लेखिका का आर्य कन्या महाविद्यालय से प्रधानाध्यापिका के रूप में अवकाश ग्रहण का दिन था, आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ । इस समारोह में शामिल होने के लिए दिल्ली से शर्मा जी एवं सुनीति जी आए। स्नेह से परिपूर्ण उनकी उपस्थिति ने मुझे अभिभूत कर दिया ।

आज सुनीति जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी स्मृतियाँ सदैव साथ रहेंगी ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

अनन्य हाऊसिंग
फ्लैट-३ आर. १/१६
२५ सी, राधामाधव दत्त गार्डेन लेन
कोलकाता-७०००१०
मो० : ८१००७५७३९०

—०—

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा – अविस्मरणीय व्यक्तित्व

- पं० योगेशराज उपाध्याय

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा के आकस्मिक निधन की सूचना आर्य समाज कलकत्ता के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में १० जनवरी २०१६ को मिली और सुनते ही पहली प्रतिक्रिया मौन स्तब्धता की थी । कुछ समय लगा इस समाचार को स्वीकार करने में । यूँ तो किसी की मृत्यु का समाचार शोक ग्रस्त करता ही है पर कुछ ऐसे व्यक्तिंत्व होते हैं जिनके बारे में यह कल्पना करना भी हृदय और मस्तिष्क को स्वीकार नहीं होता कि वो कभी हमारे बीच से चले जायेंगे । सुनीति जी भी ऐसी ही एक स्तम्भ रही थीं ।

मैंने जब से होश सम्भाला, तब से उन्हें आर्य समाज कलकत्ता के साप्ताहिक रविवारीय सत्संग में सुमधुर भजन गाते सुना था । मेरे बाल-मन के लिए उनका सुरीला कंठ और भाव में डूबकर उनका गायन साप्ताहिक सत्संग का बहुत बड़ा आकर्षण था । उनका आकर्षक व्यक्तित्व, सौम्य सात्विक दमकता चेहरा और मीठी बोली बड़े सहज रूप से ही हर किसी को उनके स्नेह बन्धन में बाँध लेता था । पिताजी स्व० आचार्य उमाकान्त जी उन्हें बहन जी कहते थे और वो पिताजी को आजीवन 'भाई जी' ही कहती रहीं । स्वाभाविक था कि हम बच्चे इस पारिवारिक माहौल में उनसे कुछ ज्यादा ही हिल-मिल गये थे । हमारे लिए श्रीमती सुनीति जी एक विदुषी, विश्व-प्रसिद्ध भजनोपदेशिका की अपेक्षा परिवार की बुआजी के रूप में ही मानसपटल पर अंकित रहीं ।

आर्य समाज कलकत्ता का नवदिवसीय वार्षिकोत्सव आर्य जगत मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। श्रीमती शर्मा जब तक कलकत्ते रहीं, तब तक इस वार्षिकोत्सव की प्राण बन कर रहीं। पिताजी के साथ के कारण मैं इस वार्षिक आयोजन की बारीकियों और चुनौतियों और असुविधाओं का सहज साक्षी रहा हूँ : एक भरोसा समाज के अधिकारियों को हमेशा रहता था कि कहीं किसी भी रिक्तता की पूर्ति के लिये श्रीमती शर्मा सहज उपलब्ध रहेंगी ।

एक वर्ष वार्षिकोत्सव पर कुछ ऐसा संयोग हुआ कि आर्य जगत के कोई भी प्रतिष्ठित प्रचारक उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे । नौ दिनों का वार्षिकोत्सव, रोज दो-तीन सत्रों में कार्यक्रम, बड़े आराम से तीन चार उपदेशकों और भजनोपदेशकों को खपा लेता था । पर कोई प्रचारक उपलब्ध नहीं था । अधिकारी बहुत चिन्तित भाव से पिताजी के पास आये और चिन्ता जाहिर की । पिताजी भी सोच में पड़े । अधिकारी अपने आचार्य को हमेशा अभिभावक के रूप में ही देखते थे । किसी अधिकारी ने बातो में ही एक सुझाव दिया कि वार्षिकोत्सव टाल देते हैं, उपदेशक उपलब्ध होंगे तो कर लेंगे । इस बात ने पिताजी को जैसे झकझोर सा दिया । उनकी मुखाकृति बदली, जैसे कोई गम्भीर निर्णय लिया, फोन उठाकर उन्होंने सुनीति जी से बात की और फिर मुस्कराकर अधिकारियों को बोले कि आपलोग तैयारी करें । मैं और सुनीति जी तो हैं ही, हम अपना वार्षिकोत्सव पूरा संभाल लेंगे । अधिकारी आश्वस्त हुए । यद्यपि पीछे ऐसी नौबत नहीं आई और उपदेशक उपलब्ध हुये, किन्तु आर्य समाज के काम में ऐसी समर्पण की भावना और श्रीमती शर्मा

की क्षमताओं पर अधिकारियों के भरोसे ने मेरे किशोर मन पर अमिट छाप छोड़ी ।

सन् १९८३ में ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर में शर्मा दम्पत्ति हमलोगों के साथ थे । वहाँ सुनीति जी का मंच से कार्यक्रम भी हुआ था । आर्य समाज कलकत्ता के दल का प्रत्येक सदस्य इतना रोमांचित और प्रसन्न था कि मानों सुनीति शर्मा जी का सम्मान हम सबका व्यक्तिगत सम्मान हो।

सन् १९८८ ई० में मेरा यज्ञोपवीत संस्कार अनुष्ठित हुआ था । उल्लास के माहौल में बड़े कार्यक्रम में थोड़ी अव्यस्था और समय की शिथिलता हो ही जाती है । संस्कार समाप्त हुआ तो समय अधिक हो गया था । श्री सुखदेव जी और श्रीमती सुनीति जी, दोनों बड़े उत्साह से पूरे कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे । अन्त में सुनीति जी ने कहा कि इस अवसर पर वे गीत सुनाना चाहतीं हैं । दो स्वरचित गीत उन्होंने मुझे और यज्ञोपवीत संस्कार को केन्द्र कर के सुनाये । सब उपस्थित लोग जैसे मन्त्रमुग्ध हो निस्तब्ध होकर सुन रहे थे । उस वक्त मेरी उम्र छोटी थी पर आज भी वह दृश्य मेरी आँखों में बसा हुआ है । सोचता हूँ, कभी तानसेन ने भी, कुछ ऐसे ही, उन मृगों को भी सम्मोहित किया होगा। यह स्मृति मेरे जीवन की अमूल्य निधियों में से एक हैं।

विगत लगभग १८-२० वर्षों से शर्मा दम्पत्ति ने कलकत्ता छोड़ दिया था और अपने पुत्र के पास मुम्बई रहने लगे थे । बीच में आना जाना हुआ था पर टेलीफोन पर बराबर सम्पर्क रखतीं। गत वर्ष, पिताजी के स्वर्गवास के बाद श्रीमती शर्मा का फोन सान्त्वना का आया था । दुःखी थीं, पर उनका स्वर मेरे लिये बहुत सम्बल देने वाला था । उसके बाद भी दो-एक बार बात हुई। मैं चकित इस बात पर था कि ८२-८३ वर्ष की आयु में भी उनका गला वही ३० वर्ष पहले जैसा ही सधा था ।

आज जब वह हमारे बीच नहीं हैं तो तमाम स्मृतियाँ मानसपटल पर उमड़ रही हैं । हमने अपना एक स्नेही स्वजन खोया है । ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के मिशन को समर्पित उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत है ।

उनके स्वर में गाया गीत "भारत के एक संन्यासी की हम कथा सुनाते हैं" आज भी कानों में गूंज सा रहा है । जैसे हम सबसे कह रही हों कि मैंने तो अपनी शक्ति भर ऋषि की कथा सुनायी, अब यह तुम लोगों की जिम्मेवारी है । उनकी इस थाती की गुरुता का अहसास लिये, इस पुण्यात्मा को मेरी विनम्र श्रद्धाञ्जलि ।

महर्षि महिमा पर्व

शुक्रवार ४ मार्च से सोमवार ७ मार्च २०१६, स्थान : १९, विधान सरणी, कोलकाता-६

समय : प्रतिदिन सायं ६ बजे से ९ बजे तक यज्ञ, भजन व व्याख्यान

आमन्त्रित विद्वान् - डॉ० शिवदत्त पाण्डेय

सोमवार ७ मार्च २०१६ को सायं ४ बजे से बहुकुण्डीय पारिवारिक यज्ञ ।

निवेदक -

दीपक आर्य (मन्त्री)

आर्य समाज कलकत्ता

।। ओ३म् ।।

श्रीमती सुनीति देवी शर्मा

अत्यन्त दुःख पूर्वक यह सूचित किया जाता है कि वेद परायण, आर्य समाजमय श्रीमती सुनीति देवी शर्मा का निधन ५ जनवरी २०१६ की रात साढ़े ग्यारह के लगभग हो गया । समस्त आर्य परिवार व शर्मा परिवार के लिये यह एक अपूर्त क्षति है ।

सुनीति जी का ज़न्म २९ जून १९३१ को कट्टर आर्यनिष्ठ परिवार में पिता श्री पं० शालिग्राम शर्मा एवं माता शान्ति देवी के घर हुआ । बचपन से ही सुनीति जी आर्य समाजों में भजन गायन में लोकप्रिय हो गई । मधुर कण्ठ के साथ वैदिक साहित्य का ज्ञान अति प्रशंसनीय हो उठा ।

विभिन्न आर्य समाजों से संलग्न उनका विवाह कट्टर आर्य समाजी श्री सुखदेव शर्मा जी से १९४६ में हुआ । विवाह उपरान्त शर्मा दम्पत्ति कलकत्ता में निवास करने लगे । १९५२ से वे दोनों कलकत्ता आर्य समाज के कार्यरत सदस्य बन गये । वेद व ऋषि दयानन्द से प्रेरित शर्मा दम्पत्ति ने सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार में लगा दिया ।

सुनीति जी ने सक्षम भजन गायिका व प्रचारक के क्षेत्र में अति प्रसिद्धि प्राप्त की । वे अपने भजन स्वयं लिखती एवं स्वयं ही संगीतबद्ध करतीं एवं उन्हें अपने कोकिल कण्ठ से गाकर सारे समाजी भक्तगण को सम्मोहित करतीं । आर्य समाज कलकत्ता ने उन्हें **संगीत भारती** की उपाधि से विभूषित किया है ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन, नैरोबी, कीनिया में १९७९ में उन्हें गायिका के रूप में बड़ी प्रसिद्धि व सम्मान प्राप्त हुआ । इसके फलस्वरूप सारे भारतवर्ष व विश्व में उन्हें सम्मान व ख्याति प्राप्त हुई । इसके पश्चात् इंग्लैण्ड व कनाडा में भी उनके भजन व प्रवचन के कार्यक्रम होते रहे और सम्मान प्राप्त होते रहे। टोरटो कानाडा के आर्य समाज (मारखम) की भजन-पुस्तिका में उनके अनेक भजन शामिल किये गये हैं। भजनों के उनके कई कैसेट व सी.डी. भी बने व अत्यन्त लोकप्रिय रहे ।

सुनीति जी ने अपने जीवन काल में दस वैदिक पुस्तकें एवं तीन कविता संग्रह प्रकाशित किये । जैसे उनके भजन लोकप्रिय थे वैसे ही उनके वेदज्ञान से पूर्ण प्रवचन भी अति प्रशंसा प्राप्त थे ।

आर्य समाज वसन्त कुंज, दिल्ली, आर्य समाज वसन्त विहार, दिल्ली, आर्य समाज शान्ताक्रूज मुम्बई, व आर्य समाज गोरेगाँव मुम्बई में उनके प्रायः ही प्रवचन व भजन होते ही रहते थे । वेदों का व ऋषि वाणी का प्रचार उनके जीवन का लक्ष्य था । २०१३ में उन्हें आर्य समाज गोरेगाँव से **जीवन गौरव** सम्मान से सम्मानित किया गया ।

आर्य स्त्री समाज भवानीपुर, कलकत्ता एवं आर्य समाज वसन्त कुंज, दिल्ली सुनीति जी द्वारा ही स्थापित हुये हैं ।

अपने जीवन काल में सुनीति जी ने पण्डिता पुरोहिता के रूप में वैदिक संस्कार भी सुनियोजित व प्रशंसनीय तरीके के कराये । कई सारे विवाह, यज्ञोपवीत, जन्म संस्कार, चूड़ा कर्म व अंत्येष्टि संस्कार उन्होंने अति क्षमता पूर्वक पूरे कराये । विवाह संस्कार के लिये तो वे बहुत लोकप्रिय थीं ।

लगभग दो-ढाई हजार लिखित भजन व दुःखमय आर्य जन वो पीछे छोड़ गईं । उनके पति श्री सुखदेव शर्मा व उनके ५ पुत्र-पुत्री, १२ पौत्र-पौत्री एवं ७ पड़ पौत्र-पौत्री उनके पीछे उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दे रहें हैं । ईश्वर उनकी ज्ञानवान आत्मा को सद्गति दें ।

पुत्री : रश्मि कश्यप, ज्योति शर्मा, मनीषा शर्मा । **पुत्र : पीयूष शर्मा, शानू देव शर्मा ।**

—o—

.........कीर्तिर्यस्य स जीवति

कुछ विभूतियाँ जगत में कुछ करने को आती हैं,
सामाजिक उन्नति-समाज की ही सेवा में,
अपने को समर्पित कर जाती हैं ।
नारी शक्ति के रूप में अवतरित हुई ये नारी,
स्त्री समाजों को स्थापित कर सींची वैदिक क्यारी ।

आज आ० सुनीति माता जी हमारे बीच नहीं हैं, बड़े दुःख की बात है, ईश्वर की व्यवस्था को नतमस्तक होकर स्वीकार करना ही पड़ता है ।

लगभग १५ वर्ष कलकत्ता में और अब १३ वर्ष मुम्बई में मुझे उनके साथ कुछ समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । भजन गाने की शैली उनकी निराली थी सभी लोग उनके भजनों को सुनने के लिए लालायित रहते थे और विदुषी तो वे थी ही, वेद मंत्रों की व्याख्या बड़े ही सहज व सुन्दर ढंग से करती थी, मृत्यु से १५-२० दिन पहले ही उन्होंने वेद मंत्र पर आधारित व्याख्यान, साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर दिया था, वैदिक सिद्धान्तों को इतनी कट्टरता से मानती थी कि कहीं पर समझौता करने का तो मतलब ही नहीं, उनको तो निडरता से अपनी बात बोलनी होती थी फिर कोई चाहे कुछ भी कहे । एक बार मैंने उनको कहा कि आर्य समाज मन्दिरों में गीता व रामायण की कथाओं के प्रोग्राम काफी कम होते हैं तो उनका कहना था कि ये काम तो हमारे अन्य भाई भी करते रहते हैं, आर्य समाज भी केवल उन्हीं कामों में लग गया तो वेदों का प्रचार कौन करेगा जो कि केवल आर्य समाज ही कर सकता है।

मुझसे उनको बहुत आत्मीयता थी कुछ दिन मिले हो जाते तो मैं तो सोचती ही रह जाती किन्तु उनका शिकायत भरा फोन आ ही जाता था।

कलकत्ता आर्य समाज के समाचार जानने को उत्सुक रहती थी, और यहाँ गोरे गाँव आर्य समाज में प्रायः कलकत्ता समाज की चर्चा करती रहती थी । अब कुछ समय से उनका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था वे अक्सर कहा करती थी कि मुझे अपने जीवन से पूरी सन्तुष्टि है, जीवन में जितना कर सकती थी काम किया और अब द्वार पर तैयार बैठी हूँ, परमात्मा जब चाहे बुला ले, मैं तो अन्त समय तक ईश्वर के भजन ही गाती रहूँगी, और वही हुआ भी ।

पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति त्याग भाव, प्रेम व श्रद्धा अनुकरणीय रहा । हमारी आदरणीय सुनीति माता जी अपनी विशेषताओं के कारण समाज में जानी जाती रहेंगी और उनके उपदेश हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती हूँ ।

भाव विभोर
– श्रीमती सुमना गुप्ता (आर्या)
मुम्बई
(पूर्व मंत्रिणी, आर्य स्त्री समाज कलकत्ता)

शङ्का समाधान

– पं० देवनारायण तिवारी

प्रति प्रबुद्ध व्यक्ति में जिज्ञासा अथवा शङ्का की भावना प्रबल होती है, वैसे यह भावना बच्चों से लेकर सुपठित अथवा अपठित जनों में भी पाई जाती है, किन्तु अधिकाधिक लोग उसे दबा लेते हैं । परन्तु उचित तो यह है कि उसे प्रकट कर दिया जाय जिससे कि उसके समाधान द्वारा औरों को लाभ मिले ।

मेरे समक्ष भी कुछ इसी प्रकार की शंकायें आई है जिनका समाधान करना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

आर्य समाज कलकत्ता के १३०वें वार्षिकोत्सव के शङ्का समाधान के अवसर पर कुछ सज्जनों ने पूछा था :—

१. आर्य समाज एक श्रेष्ठ और बौद्धिक संस्था है परन्तु अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा इसका प्रचार-प्रसार क्यों नहीं है ?

उत्तर — जन्म से कोई शिक्षित, ज्ञानी या सिद्धान्तवादी नहीं होता, इसे जानना और प्राप्त करना होता है । जैसे विद्वान् का बच्चा विद्वान्, डॉ० का बच्चा डाक्टर नहीं होता आदि-आदि भी इसी प्रकार समझना मानना चाहिए । सभी को बनना पड़ता है । वैसे ही आर्य समाजी बनना पड़ता है । आर्य समाज के सिद्धान्त और उसका कार्यप्रणाली, शिक्षा, कर्मकाण्ड, नित्यकर्म आदि क्रियाएँ कुछ कठिन है, इनमें कोई परम्परागत मान्यता नहीं है जो जन्म से आ जायेगी, किन्तु अन्य सम्प्रदायों में वह काठिन्य नहीं है। कहीं भी कुछ भी आँख मूंद कर भी की जा सकती हैं । उनमें कोई गतिरोध नहीं करता । जैसे पेड़-पौधे, मिट्टी-ढेला कबर-मजार, देवथान पूजना, ढार, तपौना कहीं भी किसी के नाम का दे देना भूत-प्रेत, पिशाच से लेकर जड़ देवता तक किसी की पूजा अचर्ना कर लेना, किसी नदी का या तीर्थ का नाम स्मरण कर लेना भी उनमें धर्म की पूर्ति मानी जाती है अथवा भक्ष्याभक्ष्य करने वाला व्यक्ति भी धार्मिक माना जाता है और मछली-माँस, मदिरा, गाँजा, सुल्फा कच्छ मच्छ सेवन करने वाला भी उनमें धार्मिक प्रतिष्ठा पा लेता है । किन्तु आर्य समाज में ऐसे आचरणों पर सर्वथा-सर्वदा प्रतिबन्ध है । इसकी संध्योपासना विधि, हवन-यज्ञ आदि सीखने जानने में बड़े ज्ञान और श्रम की आवश्यकता होती है । ऐसा नहीं है कि राधे-राधे, गणेश, शङ्कर, राम आदि बोलने से ही काम चल जायेगा । अतः आर्य समाजी (वैदिक धर्मी की संख्या कम होना स्वाभाविक है । क्योंकि कोई भी कर्म करना, वेद शास्त्रादि किसी भी ग्रन्थ का अध्ययन विवेक पूर्ण करना होता है । ऐसा नहीं है कि महान् विद्वान् वैश्वानिक नीति निपुण स्वामी सेवक हनुमान जैसे महापुरुष को बन्दर-भालू मानने से काम चल जायेगा । या कि भगवान शङ्कर जैसे परमाणु वैज्ञानिक शास्त्रों के महान् आविष्कारक को अघोरी बनाकर पूजने से धार्मिक हो जायेगा । ब्रह्म-विष्णु रुद्र, दुर्गा-काली, गणेशादि देव-देवियों को विकृत रूप में मानने से धर्मात्मा माना जायेगा। अतः आर्य समाजी

(वैदिक धर्मी) होना श्रमसाध्य और कठिन होता है । ये जन्म से नहीं हो सकते ।

२. डॉ० अजय कुमार आर्य MBBS, FRCS, ENT के सीनियर सर्जन और दृढ़ आर्य समाजी (वैदिक धर्मी) स्व० पुष्कर लाल आर्य के सुपुत्र हैं, फिर भी हवन-यज्ञ के बारे में इन्होंने कुछ प्रश्न किए हैं । अतः उनका समुचित उत्तर (समाधान) आवश्यक है ।

उनके प्रश्न हैं :–

१. हवन घी, लकड़ी, आदि जलने से कार्बन डाई ऑक्साईड तथा कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसी गैसें निकलती हैं, जो फेफड़ों के लिए हानिकारक हैं ।

२. हवन के पास बैठनें से गर्मी लगती है और पसीना निकलता है । परेशानी होती है ।

३. हवन के मन्त्र संस्कृत में हैं, अतः समझ में नहीं आते, केवल तोता रटंत से मानसिक विकास नहीं होता ।

४. हवन से छत व दीवालें काली हो जाती हैं तो इसी तरह हमारे फेफड़े भी हो जाते होंगे । अतएव दमा और हार्ट (हृदय) के रोगियों का रोग बढ़ जायेगा ।

५. हवन से वायु प्रदूषित होता है और उसकी स्वच्छता कम हो जाती है ।

हवन से कौन सी गैस निकलती है जिससे वायुमण्डल शुद्ध होता है और स्वस्थ बनाती है ।

डॉ० साहब के उपरोक्त प्रश्नों का संक्षिप्त समाधान निम्नलिखित है । इसी माध्यम से जन साधारण भी हवन का लाभ ज्ञात करें ।

कहीं कभी भी हवन करने से कोई हानि नहीं होती है

१. घी और विभिन्न औषधिमय हवन सामग्री जलाने से हानिकारक गैसों का कुप्रभाव नष्ट हो जाता है । जैसे केवल वस्त्र या रूई जलने पर दुर्गन्ध निकलती है परन्तु वही घृत मिश्रित हो जाने पर गन्ध नहीं देती । बल्कि कार्बन डाई ऑक्साईड (प्राङ्गोदीय) एवं प्राङ्गार द्विजारेय (हाइड्रोजन) वायु का शोधन होकर प्राणवायु की मात्रा बढ़ जाती है । तथा अति तीव्रता के साथ उसका भेदन वाले वायु को समुग्र कर देता है ।

२. हवन के समय गर्मी लगना और पसीना निकलना कोई ऐसा कष्ट नहीं है जो परेशानी पैदा करें। यह तो ऋतु अनुसार या कोई भी श्रम करने पर स्वाभाविक है ।

३. हवन के समय वेद मन्त्रों के पाठ से अन्तरिक्ष में उन्नत लाभकारी प्रदूषण रोधक तरङ्गों का वैशिष्ट हो जाता है । वाक् — तरङ्गों की तात्कालिक बेधन शक्ति के माध्यम से उच्चरितवाणी का समस्त ब्रह्माण्ड में त्वरित प्रसार होता है । जैसे संसार के किसी भी कोने में बोला हुआ शब्द या दृश्य दूरदर्शन, रेडियो मोबाइल आदि यन्त्रों द्वारा तत्काल ही सुनाई और दिखाई पड़ता है । लेकिन जैसे वह बिन्दु पर बिन्दु मिलने पर ही सम्भव है । इसी तरह वेद मन्त्रों के पाठ का लाभ भी उसकी शुद्धता और उचित विनियोग पर निर्भर है । यह आप का कथन उचित है कि मन्त्रों का सार्थक पाठ करना अत्युत्तम है । उससे कर्त्ता को उसका आशय लक्ष्य भी समझ में आ जाता है ।

४. खिड़कियां और दीवालें बदरङ्ग होना कोई समस्या नहीं है। यह कोई बाध्यता नहीं है कि फ्लैट में ही यज्ञ करें उसे कहीं भी पार्क, बरामदा या मैदान में भी सुविधानुसार कर लेना चाहिए। यद्यपि हवन से मैली हुई दीवारें भी विषैले जीव जन्तुओं और कीटाणुओं से रहित हो जाती हैं।

५. यज्ञ का धुँआ किसी परिस्थिति में फेफड़ों को हानि नहीं पहुँचाता, बल्कि लाभदायक होकर उनको बलवान करता है। बहुत सज्जन आजीवन हवन कर रहे और करवा रहे हैं और मैं भी सन् १९६० से हवन करवा रहा हूँ और लगभग ७५ वर्ष की आयु में पूर्ण स्वस्थ हूँ। जबकि २-४ हवन प्रायः रोज करवाता हूँ।

६. उदाहरण :- फ्रांस के वैज्ञानिक मिस्टर ट्रिलवर्ड का कहना है कि खाँड़-शक्कर मुनक्का आदि जैसे मीठे और फलों के जलने पर फारमैलडीहाइड की उत्पत्ति होती है। यह गैस विभिन्न प्रकार के मारक रोगवर्धक कृमियों का नाश कर वायु को मनुष्योपयोगी बना देता है।

खाँड आदि मीठे फलों को वैज्ञानिकों ने सुक्रोस (Sucrose) की संज्ञा दी है। जो २१०° पर गर्म करने से इसका पानी उड़ जाता है और (caramel) नाम का एक पदार्थ बन जाता है। अधिक तापमान पाने पर कार्बनडाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, मेथेन, ऐथेलीन (ethylene), एसीटिलीन, ऐसीटोन फारमिक अम्ल, अकरोलीन आदि उत्पन्न होते हैं। ऑक्सीकरण पर खाँड़ आदि मीठे पदार्थ और घी ऑक्सैलिक अम्ल (oxalic acid) तथा सैकरिनिक अम्ल (saccharinic acid) को जन्म देती है जो मनुष्य के लिए जीवन दायिनी है।

मीठे फलों और शहद तथा घी में ग्लूकोज, फ्रूक्टोज़, आदि होते हैं। फलों में इनकी उत्पत्ति जलीय विच्छेदन से होती है। इनकी ऑक्सीकरण पर भिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग स्वास्थ्यबर्धक पदार्थ बनते हैं। उदाहरणार्थ ग्लूकोज का ऑक्सीकरण निम्न प्रकार से माना गया है।

CHO		COOH		COOH	COOH
|		|		‖	|
$[CHOH]_4$	→	$[CHOH]_4$	→	$[CHOH]_4$	[CHOH]
|		|		|	|
CH_2OH		CH_2OH		COOH	COOH
ग्लूकोज		ग्लूकोनिक अम्ल		सैक्रिक अम्ल	टाटारिक अम्ल

इसी प्रकार अन्य हवन वाले पदार्थ भी आक्सीकृत होते रहते हैं। सभी प्रकार के दूध और मिष्ट वस्तुओं में लैक्टोज (Lactose) होता है। इनके आक्सीकरण पर सैक्रिक अम्ल बनता है, जो लाभदायक ही होता है।

यदि सूर्य के प्रकाश की विद्यमानता में यज्ञ किया जाय तो कई प्रकार के रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं। इससे कई एल्डीहाइड और ऐलकोहल ऑक्सीकृत हो जाते हैं। इससे हाइड्रोकार्बन तथा

फीनोल का बहुलीकरण (Polymerise) हो जाना सम्भव है। इससे कई हाइड्रोकार्बनो का ऑक्सीकरण भी हो जाता है। पराबैगनी प्रकाश (Ultraviolet Light) में कुछ कार्बनडाइ ऑक्साइड पानी के साथ मिलकर फारमैलडीहाइड भी बना लेती है।

जैसे :- [$CO_2 + H_2O$ + 11200 कैलोरी = $HCHO + O_2$]

[कार्बन डाइ आक्साइड + पानी = फारमैल्डीहाइड + ऑक्सीजन] फारमैलडीहाइड अन्य यज्ञीय परिवर्तनों के द्वारा भी बनता रहता है।

उदाहरणार्थ — एसीटिक अम्ल, ग्लिसरोल, ऐसीटोन आदि भी हवन से पैदा होते हैं। सूर्य के प्रकाश की विद्यमानता में ये फारमैल्डीहाइड में बदल जाते हैं। ऐसीटिक अम्ल का परिवर्तन निम्नलिखित ढंग से होता है —

$CH_3COOH + HOH = CH_3OH + HCOOH$

$CH_3OH + O = H_2O + HCHO$

पाइरूभिक एसिड, ऑक्सैलिक एसिड, ग्लूकोज, कारमिक एसिड। प्रोपियानिक एसिड, खण्ड स्टार्च, स्टियरिक अम्ल (Stearic Acid) भी सूर्य के प्रकाश में फारमैलडीहाइड बनाते हैं। अतः हवन कभी भी हानिकारक नहीं होता। अतः हवन यज्ञ करना एक सर्वोत्तम कर्म है जो कि हर स्थिति में किया जाना पवित्र कर्म है। हवन के माध्यम से अनेक रोगों का निराकरण होता है उससे बीमारियाँ नहीं होती। इसको विस्तार से जानने की चेष्टा करें।

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी
कोलकाता-७००००६
मो० ९८३०४२०४९६

(पृष्ठ २५ का शेषांश)

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारणा, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम-कदम पर सिद्धान्त के विरुद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्यपालन का व्रत लेना चाहिये।

C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड, २ तल्ला
कोलकाता - ७००००७
फोन : (०३३) २२१८३८२५
मो: ९८३०१३५७९४

—o—

।।ओ३म्।।

महर्षि दयानन्द जी ऋत सत्य ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये

– पं० उम्मेद सिंह 'विशारद', वैदिक प्रचारक

जब-जब सृष्टि में ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान के अभाव से संकट उत्पन्न होता है तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरुष का जन्म होता है। ऐसे व्यक्ति विश्वात्मा के वाहन होते हैं किन्तु वे परमात्मा के अवतार नहीं होते, परन्तु उनमें विषम परिस्थितियों को मिटा देने के लिए शक्ति का संचार हो जाता है। अठारहवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की विषम परिस्थितियों को चैलेंज के रूप में ऋषि दयानन्द जी ने स्वीकार किया।

प्रथम घटना :- ऋषि दयानन्द जी के जीवन में महाशिवरात्रि के पर्व पर रात भर जागकर शिव जी के मन्दिर में मूर्ति के सामने बैठकर उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिवजी के दर्शन तो क्या होने थे, मन्दिर में सन्नाटा देखकर चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े प्रसाद को खाने लगे और उछल-कूद करने लगे। यह सब देखकर मूलशंकर (बचपन का नाम) के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई ये कैसे देवता हैं जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं। इस समस्या का समाधान कोई नहीं कर सका यही कारण है कि अपने कार्यकाल में दयानन्द जी ने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया और रूढ़िवादिता के घोर शत्रु हो गये। यही घटना विश्व का कल्याण कर गई।

द्वितीय घटना :- दीपावली के महापर्व पर इस नश्वर संसार से विदा लेते समय अन्तिम बार कहा कि हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की। वाह क्या बात है किसी से न गिला न शिकवा अपितु अपने प्रभु द्वारा जो संसार चक्र चल रहा है और जो जीवों का कल्याण हो रहा है उस ईश्वर इच्छा का स्मरण करते हुए अन्तिम विदा ली और उस दीपावली में एक ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये।

विलक्षण प्रतिभाशाली ऋषि दयानन्द :- महर्षि दयानन्द सच्चे ईश्वर भक्त थे और इतना बड़ा आत्मबल था कि सदैव सत्य प्रकट करने में अग्रणी रहते थे। वे जानते थे जब तक असत्य का खण्डन नहीं किया जायेगा, तब तक सत्य का मण्डन नहीं होगा। यही कारण है एक तरफ दयानन्द थे और दूसरी ओर सारा जमाना था। उन्होंने समाज के तमाम बुराइयों को सुधारने के चैलेन्ज को स्वीकार किया और जमाने की गर्दन पकड़कर अपनी ओर चलाया। आज संसार में जो तमाम सुधारवादी विचार दिख रहे हैं वह सब ऋषि दयानंन्द जी की देन है।

आज करोड़ों आर्य भी असत्य खण्डन में असमर्थ हैं :– महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज खोलकर सदैव के लिए सत्य का मंडन और असत्य का खण्डन करने के लिए आर्यो को एक मंच दिया है और इदन्नमम का पाठ पढ़ाया था, परन्तु आज हम मम-मम का पाठ तो पढ़ रहे हैं। इदं न मम को एक किनारे रख दिया है। आज अधिकांश आर्यो के परिवार से लेकर चारों ओर समाज में कदम-कदम पर धार्मिक, सामाजिक अन्धविश्वास परोसा जा रहा है और हम असहाय मूक बनकर देख रहे हैं। हम महर्षि की आज्ञा की अवज्ञा व वैदिक सिद्धान्तों से समझौता करते जा रहे हैं। यदि आर्य जगत समाज की एक-एक बुराई को लेकर क्रमशः आन्दोलित, सामूहिक रूप से एक स्वर में हो जाये तो समाज में

व्यापक प्रभाव पड़ सकता है । हम आर्यो का कार्य केवल आर्य समाज भवनों की रक्षा करना ही नहीं हैं अपितु बाहर भी निकलना पड़ेगा ।

महर्षि ने ज्ञान दीप द्वारा तमाम अन्धविश्वासों से सजग कराया :- स्वामी विरजानन्द जी द्वारा तीन वर्षो में आर्ष, अनार्ष साहित्य का ज्ञान प्राप्त करके रणक्षेत्र में उत्तर पड़े । ऋषि दयानन्द समझते थे कि हिन्दू समाज का सम्पूर्ण ढाँचा बिगड़ा हुआ है । वेदों और उपनिषदों के अर्थ का अनर्थ करके और पुराणों के कल्पित कथाओं व साहित्य से चारों ओर अन्धविश्वास फैल गया है । इसीलिए उन्होंने सबसे पहला प्रहार वेदों के अर्थों पर किया और सायणाचार्य, महीधर, मेक्समूलर आदि ने जो वेदों के अर्थ किये थे उन्हें नकार दिया क्योंकि वे इतिहासपरक अर्थ थे महर्षि जी ने ईश्वर परक अर्थ करके वेदों का सत्य स्वरूप सामने रखा । एक नई हलचल मचा दी । धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिला दी ।

सम्पूर्ण भारतवासी पाँच हजार साल से चली आ रही धार्मिक विचारधाराओं से बंधे हुए थे भारतीयों को सत्य विचारधारा ने अत्यन्त प्रभावित किया और आश्चर्य चकित थे कि एक देवदूत अकेला सम्पूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरीतियों पर कैसे निर्भीकता से प्रहार कर रहा है । एक नया आन्दोलन खड़ा हो गया ।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढ़ि अर्थों को बदल दिया, तथा धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार, राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार, सामाजिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार तथा वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, अन्ध पूजा पद्धति पर प्रहार तथा भारतवर्ष मुसलमानों व अंग्रेजों का गुलाम था, उससे मुक्ति हेतु स्वराज्य शब्द का दीप जलाया, स्वंतन्त्रता का पाठ पढ़ाया ।

महर्षि दयानन्द जी सदैव के लिये आर्ष साहित्य रचकर ज्ञान-दीप जला गये :- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व वेदों का आर्ष भाष्य व जीवन निर्माण के सोलह संस्कारों के लिए संस्कार विधि तथा पंच यज्ञ महाविधि, गौकरुणा निधि, व्यवहार भानु व अन्य साहित्य रचकर और इनका निरन्तर प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज का संगठन बना कर गये । आर्यों के लिये इन सभी को मार्ग निर्देशिका बना गये ।

आर्यो का अतीत, वर्तमान व भविष्य :- महर्षि दयानन्द जी के दिवगंत के अर्ध शताब्दी तक आर्यो का त्याग का स्वर्ण युग था, वर्तमान में आन्दोलन तथा असत्य का खण्डन व आर्य नेतृत्व द्वारा कुरीतियों पर प्रहार एक स्वप्न रह गया है और सनातनी भद्र मूर्तियों की पूजा करते हैं और आर्य समाजी मन्दिरों में यज्ञ की पूजा द्वारा ईश्वर को याद करते हैं । जो आर्य समाज का आन्दोलन था वह अतीत होता जा रहा है । नई पीढ़ी के लिये कल का आर्य समाज दिशाहीन है । उनको विरासत में आर्यसमाज मन्दिरों की रक्षा व रविवार को केवल दो घण्टे यज्ञ व सत्संग के संस्कार मिल रहे हैं । इसलिये जो वर्तमान में आर्य जगत में हो रहा है, भविष्य में वही होगा इसको नकार नहीं सकते हैं । आर्यो ! हमें आर्य समाज की दशा और दिशा पर चिन्तन करना ही पड़ेगा ।

गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)
मोबाईल - ९४११५१२०१९

—o—

वेद–महान वैज्ञानिकों की दृष्टि में

– विद्यावाचस्पति परीक्षित मंडल प्रेमी,
साहित्यालंकार

अपौरुषेय वेद परमात्मा द्वारा प्रदत्त दिव्य ज्ञान है । यह दिव्य ज्ञान परमात्मा ने मानव कल्याण के लिए दिया है । संसार के पुस्तकालय में वेद से पुराना कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है । वेदों की रचना एवं उसके स्वरूप के सम्बन्ध में विश्व के महान वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों के निम्नलिखित विचार द्रष्टव्य हैं –

१. प्रो० मैक्समूलर (जर्मनी) ने कहा है – "We could not hope to be able to lay down any terminus a quo-whether the vedic hymns were composed in 1000 or 1500 or 2000 or 3000 years B C no power on earth could ever fix. पुनः मैक्समूलर **India What Can it Teach us,** page 72 में लिखते हैं कि –"

I maintain then, that for a study of man, or, if you like, for a study of Aryan humanity, there is nothing in the world equal in importance with the veda. I maintain that, to everybody who cares for himself, for his ancestors, for his history, or for his intellectual development, a study of vedic literature is indispensable. पुनः मैक्समूलर ने **'India : what can it Teach us'** नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ११८ में लिखा है – "The vedas may be called primitive, because there is no other literary document more primitive, than it, but the language, the mythology, religion and philosophy that meet us in the veda open vistas of the past which no one could venture to measure in years."

२. – मि० मौरिस फिलिप ने अपनी पुस्तक **Teaching of the vedas** पृष्ठ २४४ में लिखा है "After the latest researches into the history and chronology of books of old testament, we may safely now call the Rigveda as the oldest book not only of the Aryan humanity but of the whole world. Conclusion therefore, is inevitable, that in the development of religions though India has been uniformly downward and not onward deterioration and not evolution, we are justified therefore in concluding that higher and purer conceptions of the Vedic Aryans were the results of a primitive divine revelation" अर्थात् वेद भारत की ही नहीं, अपितु समस्त संसार की सबसे प्राचीन सनातन धर्म पुस्तक है । संसार की सभ्यता का आदिम स्रोत वेद है । क्योंकि वेद ईश्वरीय और अपौरुषेय है ।

३. पाश्चात्य संत एडवर्ड कारपेण्टर अपनी पुस्तक "**Art of Creation**" में लिखते हैं – "A new philosophy, we can hardly expect or wish for, since the same germinal thoughts of the vedic authors have come all the way down history, even to Schopenhaur and Whitman inspiring philosophy after philosophy, religion and after religion" अर्थात् आजतक एक भी नया विचार संसार

में नहीं आया, जो वेदों में प्राप्त न हो । चाहे शोपनहार का दर्शन पढ़ जाओ और चाहे ह्विटमैन के धर्मोपदेश, वेदों के ही विचार सर्वत्र मिलते हैं । वेद ही सनातन है । आजतक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि वेदों से बढ़कर ज्ञान, विज्ञान और ज्ञान प्रतिपादक कोई ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है ।

४. श्रीमती बलाबेटस्की ने अपनी पुस्तक **"Secret Doctrine"** पृष्ठ २४५ में लिखा है "वास्तव में वेद ईश्वरीय है ।"

५. श्री डब्ल्यू०जी० हन्टर ने **"महान् भारत"** पुस्तक में स्पष्ट लिखा है इस पूजनीय ऋग्वेद की आयु अज्ञेय और अपरिमित हैं ।

६. मि०पी०जी० रेली (अमेरिका) ने लिखा है "वेद वास्तव में ईश्वर प्रदत्त रहस्यमय ग्रन्थ है ।"

७. टिनाबली के विशप डॉ० कार्डवर्थ ने लिखा है "हम ऐसे विचारों को ईश्वरीय ज्ञान मानने में जरा भी आनाकानी नहीं करते ।"

८. अमेरिकन साईन्टिफिक एफिलिएशन के अध्यक्ष डॉ० लोबेल मिक्सटर ने लिखा है "यह बात निर्विवाद और निर्भ्रान्त है कि वेद विश्व साहित्य का सबसे प्रामाणिक और प्राचीनतम ग्रन्थ है । यह अनादि और अपौरुषेय काव्य है ।"

९. विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ० एण्ड्रयू कान्बे आइबी ने भारत के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान यात्रा से वापस जाकर वेदों के सम्बन्ध में लिखा है "वेद अपौरुषेय ज्ञान है, जिसका प्रादुर्भाव ऋषियों पर सृष्टि के आरम्भ में समाधि द्वारा होता है । (समाधि नहीं, बल्कि परमात्मा ने चार बालक ऋषियों के अन्तःकरण को पवित्र करके उसमें मंत्रों को गाया था ।"

१०. डॉ० जॉन लियो एबरनेथी (सह संपादक : जरनल ऑफ केमिकल एजुकेशन) ने लिखा है वेद की ऋचाएँ कब रची गई ? तथा इतनी उच्चकोटि की गुरु गम्भीर ऋचाएं रचने की कब सूझ हुई ? इन सारी बातों के समय का निश्चय करना बिलकुल असम्भव है ।

११. आणविक भौतिकी जीव भौतिकी तथा न्यूट्रोन रेडिएशन आइसोटॉप्स के विशेषज्ञ डा० क्लेरेन्स एभरसोल ने लिखा है मानव के ज्ञान का श्रीगणेश अपौरुषेय वेद से होता है । इससे प्राचीनतम ग्रन्थ विश्व में अबतक उपलब्ध नहीं हो सका है ।

१२. वासमैन जर्नल ऑफ बायोलोजी के संपादक डॉ० एडवर्ड लूथर कैसल ने लिखा है "निःसंदेह बिना स्रष्टा के इस प्रकार का सृजन नहीं हो सकता । अतः यह कहा जा सकात है कि परमात्मा ही अपौरुषेय वेद का रचयिता है ।"

१३. श्री जैकोलिएट (चन्द्रनगर फ्रेंच कॉलोनी, बंगाल के चीफ जस्टिस) ने अपनी पुस्तक **"बाईबिल इन इण्डिया"** के द्वितीय भाग, पृष्ठ २४६ में लिखा है "Astonishing fact the Hindu revelation (vedas) is of all revelation the only one whose ideas are in perfect harmony with science as it proclaims the slow and gradual foundation of the world." अर्थात् बड़े आश्चर्य की

बातहै कि ईश्वरीय ज्ञान समझे जाने वाले ग्रन्थों में से केवल वेद ही है, जिसके सिद्धान्त विज्ञान के सर्वथा अनुकूल है ।

१४. नोबेल पुरष्कार विजेता महान दार्शनिक मैटरलिंक ने अपनी पुस्तक **''The Great Secret''** पृष्ठ २४४ में लिखा है — Only the glare of the clairvoyant directed upon the mysteries of the past may reveal unrevalled wisdom which lies hidden behind those writings (vedas)." अर्थात् वेद ही एकमात्र ज्ञान के भण्डार हैं । जिनकी तुलना हो ही नहीं सकती, वेदों में गुप्त रूप से अर्थात् मंत्ररूप से समस्त विद्याओं का उपदेश निहित है ।

१५. अमेरिका के विश्रुत विचारक मि० थौरी ने **''The Glory of The Vedas''** नामक पुस्तक के पृष्ठ ७ एवं ८ में लिखा है "What extracts from the vedas I have read, fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum free from particulars simple, universal; the vedas contain a sensible account of god. अर्थात् वेदों की विचारधारा पवित्रतम है । वेदों में प्रकाश, ज्ञान और विज्ञान है । वेद सार्वजनिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। वेदों में परमात्मा का पवित्रतम प्रकाश प्रसारित हैं ।

१६. लॉर्ड मार्ले ने **'महान भारत'** नामक पुस्तक के प्रथम संस्करण पृष्ठ २४२ में लिखा है — जो कुछ वेदों में है, अन्यत्र कहीं नहीं मिलता ।

१७. कील विश्वविद्यालय के प्रो० कील ने अपनी पुस्तक **The Prehistoric Antiquity of Aryan's** पृष्ठ २४४ में लिखा है कि वेद समग्र ज्ञान का आदि और अन्त है ।

१८. प्रो० मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक **"History of Sanskrit Literature"** में लिखा है — किसी भी भाषा के ग्रन्थ ने जो काम नहीं किया वह वेदों ने संसार के इतिहास में किया है । जिन्हें अपने और अपने पूर्वजों का अभिमान है, जिन्हें बौद्धिक विकास की इच्छा है, उन सबको वेदों का अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है । पुनः — वेद अपौरूषेय और नित्य है ।

१९. अमेरिकन महिला व्हीलर विलकाक्स ने **"The Sublimity of the Vedas"** ने लिखा है वेदो में केवल जीवन संबंधी धार्मिक विचार ही नहीं, प्रत्युय वे वास्तविकताएँ हैं जिन्हें समस्त विद्वानों द्वारा सत्य का प्रमाण मिला है ।

२०. यूरोप के प्रसिद्ध विचारक डॉ० जेम्स कज्जिन, डी० लिट् ने लिखा है — वैदिक आदर्शों पर चलने से ही संसार फिर स्वर्ग और सुरधाम बन सकता है ।

हिन्दी अध्यापक,
संत फ्रांसिस उच्च विद्यालय
पोड़ैयाहाट-८१४१५३
जिला-गोड्डा (झारखंड)

—o—

।।ओ३म्।।

''महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्ग दर्शक हैं''

– खुशहाल चन्द्र आर्य

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ० महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक ''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'' शीर्षक से लिखा था । उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने की लिखी थी, सो दूसरा लेख इस भाँति हैं ।

ऋषिवर दया, करुणा और मानवता के सागर थे । वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे । वे कभी अपने सुख-दुःख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे । उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी — भारत पुनः जगद्‌गुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो ? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई — मनगढ़न्त पोपलीलाएँ कैसे दूर हों ? इन झूठे पाखण्डी गुरूओं, महन्तों सन्तों आदि की इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे ? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पशुता आदि से मुक्त हो । ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है :—

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है ।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है ।।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये । जो देश कभी शान्ति-सुख, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था, आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है । यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी । एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा — एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते-बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया । ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके । करूण स्वर से बोले — हाय ! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता ? उनकी आँखों से आँसुओं की धारा अविरल बहने लगी । कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा-पूरा था । सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है । वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे ।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया । जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते हुए । सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे । उन्होंने दुनियाँ को झुकाया,

पर स्वयं नहीं झुके । दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले । जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण व्यक्त था । घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे । ये दिव्य गुणों के खान थे । उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नवजीवन दायक था । उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे । प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है । ऋषि का जीवन-दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है ।

विलासी, दुर्व्यसनों में फँसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया । उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये । स्वामी श्रद्धानन्द ने देश-धर्म-जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे । यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा ।

मुन्शीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था । किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया । भजन बड़ा ही मधुर था । लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था । सहज ही ऋषि जी की सत्यवाणी निकली — अमीचन्द ! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फँसे हो । इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलटकर रख दिया । बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था । मृत्यु का अन्तिम दृश्य ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये । उनके विचार बदल गये । उन्होंने सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया ।

प० लेखराम, ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया । ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गये तकरीर-तहरीर का काम बन्द न होने देना ।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया । ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जुनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है । उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन ।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदारहरण, घटनाएँ व बातें हैं, जो आज के जीवन और जगत् को संभलने, सुधारने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं । स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी । उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया । प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था ।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

।। ओ३म् ।।

आर्य जगत् के समाचार

सुशीला - चांदरतन दम्माणी के विवाह-स्वर्ण-जयन्तोत्सव पर मिती मार्गशीर्ष पूर्णिमा सं० २०७२ विक्रमी शुक्रवार दिनांक २५.१२.२०१५ को आर्य समाज बड़ाबाजार, कोलकाता के सभागार आयोजित एक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के नाम तथा परिणाम ।

क) प्रतियोगिता में निम्न सज्जनों ने भाग लिया । सबके उत्तर लिखित प्राप्त हुए –

(१) श्री जितेन्द्र माहेश्वरी, मुम्बई, (२) श्रीमती अरूणा मिमानी, (३) ब्र० विद्याव्रत आर्य, (४) वेदव्रत (दोनों गुरुकुल कोलाघाट), (५) श्रीमती आराधना जायसवाल, (६) श्री बल्लभदास मूँधड़ा, (७) श्रीमती श्वेताम्बरी कोठारी (वर्षा), (८) श्रीमती सुमित्रा बिहानी, (९) श्रीमती सुशीला माहेश्वरी, रिसड़ा, (१०) श्री रमाकान्त तिवारी, (११) सुश्री विनीता जायसवाल, (१२) श्रीमती स्नेहलता गुप्ता, (१३) श्रीमती पल्लवी गुप्ता एवं (१४) कुमारी अर्यमा दम्माणी (९ वर्ष)

ख) परिणाम निम्नवत रहे –

प्रथम पुरस्कार २०००/- रु० की नकद राशि के निम्न दो भाग हुए –

प्रथम पुरस्कार १०००/- रु० श्री बल्लभदास मूंधड़ा

प्रथम पुरस्कार १०००/- रु० श्रीमती आराधना जायसवाल

द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमश १०००/- एवं ७००/- रु० किसी को नहीं

विशेष (पाँच) पुरस्कार ५००/- रु० प्रत्येक को निम्न प्रकार घोषित हुए –

(१) श्रीमती श्वेताम्बरी कोठारी, (२) श्रीमती सुशीला माहेश्वरी, (३) ब्र० विद्याव्रत (गुरुकुल कोलाघाट), (४) ब्र० वेदव्रत (गुरुकुल कोलाघाट), (५) श्रीमती अरूणा मिमानी ।

विशेष सान्त्वना पुरस्कार (सात) प्रत्येक १००/- रु० निम्न प्रकार रहे –

(१) श्रीमती स्नेहलता गुप्ता, (२) श्रीमती सुमित्रा बिहानी, (३) कुमारी अर्यमा दम्माणी, (४) श्रीमती पल्लवी गुप्ता, (५) श्री रमाकांत तिवारी, (६) श्री जितेन्द्र माहेश्वरी एवं (७) सुश्री विनीता जायसवाल।

नोट :- (१) परीक्षक की टिप्पणियों सहित अपनी-अपनी उत्तर कापियाँ प्रतियोगी १५ फरवरी २०१६ तक आयोजकों से प्राप्त कर सकते हैं ।

(२) आयोजकों की ओर से शास्त्रोचित व समझ में आने लायक उत्तर छपे हुए, परिणाम की घोषणा के समय सबको वितरित कर दिये गये जिनकी अतिरिक्त प्रतियाँ प्रचारार्थ आयोजकों से कोई भी प्राप्त कर सकता है ।

(३) निर्णय की घोषणा एवं आयोजकों की ओर से प्रस्तुत छपे उत्तर से सभी पूर्ण सन्तुष्ट थे ।

—o—

(पृष्ठ २ का शेषांश)

६४ वर्ष की आयु में दिनांक ३-११-२०१५ को गार्डेनरीच अस्पताल कलकत्ता में हो गया है ।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १५-११-२०१५ के रविवारीय सत्संग पर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी ।

७. आर्य समाज कलकत्ता के सदस्य श्री रामपूजन वर्मा जी के बड़े भाई श्री वासुदेव वर्मा जी का निधन बृहस्पतिवार १२ मार्च, २०१५ को लगभग ७४ वर्ष की आयु में उनके निवास स्थान माउख (मंगुराडिला) अम्बेडकर नगर (उ०प्र०) में हो गया है ।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १५-३-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी ।

८. आर्य समाज कलकत्ता की सदस्या तथा आर्य कन्या महाविद्यालय की पूर्व प्रधानाचार्या एवं विद्यालय की वर्तमान प्रबन्ध समिति की सदस्या श्रीमती सरोजिनी शुक्ला जी के प्रति श्री सुरेन्द्र कुमार शुक्ला जी का ८६ वर्ष की आयु में २ दिसम्बर, २०१५ को प्रातः १० बजे उनके निवास स्थान पर हृदयगति अवरुद्ध हो जाने के कारण निधन हो गया है ।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक ६-१२-२०१५ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी ।

९. प्रसिद्ध साहित्यकार एवं बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी जी की माता जी श्रीमती राम दुलारी देवी जी का निधन ७ जनवरी, २०१६ को ९७ वर्ष की आयु में हो गया है ।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १७-१-२०१६ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी तथा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी ।

शुद्धि समाचार

१. सहीदा खातून, आयु २५ वर्ष ने ३० अगस्त २०१५ को इस्लाम मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म अंगीकार किया । शुद्धि संस्कार पं० देवनारायण तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम सहीदा साहा रखा गया ।

२. अरजीना खातून, आयु २० वर्ष ने ६ सितम्बर २०१५ को इस्लाम मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम अनु राय रखा गया ।

३. खोन्दोकर अब्दुल मोतोलब, आयु २३ वर्ष ने २८ नवम्बर २०१५ को इस्लाम मत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया । शुद्धि संस्कार पं० आत्मानन्द शास्त्री जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् इनका नाम देवदत्त मुखर्जी रखा गया ।

४. रोहिणी वन्दना गोम्स, आयु २८ वर्ष ने ११ दिसम्बर २०१५ को ईसाईमत त्यागकर स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया । शुद्धि संस्कार पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ । शुद्धि संस्कार के पश्चात् उनका नाम रोहिणी वन्दना सेनगुप्ता रखा गया ।

१९९५ में श्रीमती सुनीति शर्मा को सम्मानित करते हुए आर्य कन्या महाविद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सरोजिनी शुक्ला ।

१९९९ में आर्य कन्या महाविद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सरोजिनी शुक्ला के अवकाश ग्रहण समारोह में श्रीमती सुनीति शर्मा सम्बोधित करती हुई ।

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए **श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल** द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३